International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

श्रावस्ती जनपद में भूमि उपयोग परिवर्तन : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ राज कुमार गुप्ता[1], डॉ शिवेन्द्र प्रताप सिंह[2]

[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, सन्त विनोवा पी जी कालेज देवरिया।
[2]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, किसान पी जी कालेज बहराइच।

सारांश

भूमि उपयोग पृथ्वी के किसी क्षेत्र का मनुष्य द्वारा उपयोग को सूचित करता है। भूमि उपयोग को किसी विशिष्ट भू–आवरण प्रकार की रचना, परिवर्तन अथवा संरक्षण हेतु मानव द्वारा उस पर किए जाने वाले क्रिया–कलापों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। श्रावस्ती जनपद नेपाल से सटा उत्तर प्रदेश के उत्तर पूर्व में स्थित एक जिला है। जनपद की मुख्य नदी राप्ती है, यहां खादर (नवीन जलोढ़) मिट्टी पायी जाती है। श्रावस्ती नीति आयोग के आकांक्षी जिला कार्यक्रम का हिस्सा है। जनपद की अधिकतम आबादी कृषि कार्य में संलग्न है चूंकि श्रावस्ती उ0प्र0 के सबसे पिछड़े जिलो में से एक है। जनपद में पर्याप्त भूमि क्षेत्र है लेकिन उसे उपयोगी और शाश्वत बनाये रखने के लिए उचित देखभाल की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोधपत्र में 2005–06 से 2020–21 के मध्य अध्ययन क्षेत्र के बदलते भूमि उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या दबाव के कारण भूमि उपयोग प्रतिरूप में असन्तुलन बढ़ रहा है। शुद्ध कृषित भूमि, चारागाह एवं उद्यानों के अन्तर्गत भूमि दिन प्रतिदिन कम हो रही है। अकृष्य कार्यो में प्रयुक्त भूमि में निरन्तर वृद्वि होती जा रही है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन काल (2005–06 से 2020–21) के दौरान भूमि उपयोग परिवर्तन की रूप रेखा तैयार करना है।

मुख्य शब्दः भूमि उपयोग, परती भूमि, चारागाह, बंजर भूमि, ऊसर भूमि, कृषि योग्य बेकार भूमि, शुद्ध कृषित क्षेत्र

भूमिका:

प्राकृतिक संसाधनों में भूमि सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। भूमि ही अन्य सभी संसाधनों का आधार है अर्थात् इसी भूमि पर ही अन्य संसाधनो का निर्माण हुआ है। भूमि का उपयोग भिन्न–भिन्न प्रयोजनों हेतु भिन्न–भिन्न संदर्भो में किया जाता है। साधारण मानव के लिए भूमि उसके आवास उपलब्ध कराने के संदर्भ में प्रयुक्त की जाती है। वहीं यदि आर्थिक उपयोग के संदर्भ की बात करें तो भूमि का प्राथमिक उपयोग कृषि के लिए एवं उसके पश्चात् अन्य क्रिया कलापों के संदर्भ में किया जाता है। उदाहरण स्वरूप औद्योगिक इकाइयो की स्थापना, परिवहन अवसंरचना इत्यादि के निर्माण में भूमि का उपयोग किया जाता है। भूमि उपयोग मनुष्य के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक अर्न्तसम्बंधों का प्रतिफल है। मानवीय सभ्यता और

उसकी आवश्यकताओं में परिवर्तन के अनुसार भूमि उपयोग का स्वरूप बदलता रहता है। एच0ए0 वुड (1977) के अनुसार भूमि प्रयोग केवल प्राकृतिक भूदृश्य के संदर्भ में ही नहीं अपितु मानवीय क्रियाओं पर आधारित उपयोगी सुधारों के रूप में भी प्रयुक्त होना चाहिए। सी0 वैनजेंटी (1972) के अनुसार भूमि उपयोग प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दोनों ही उपादानों के संयोग का फल है।

जनपद श्रावस्ती $27^0 04'$ से $28^0 24'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0 6'$ से $82^0 9'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है। 2023 में इसका कुल क्षेत्रफल 1858 वर्ग किमी0 है जो उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 0. 77 प्रतिशत है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की जनसंख्या 1117361 व्यक्ति थी। जनपद का जनघनत्व 681 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी, लिंगानुपात 881, साक्षरता दर 46.74% जिसमें पु0 57.16% एवं महिला 34.78% है। जनपद की दशकीय जनसंख्या वृद्वि दर 2001 से 2011 के बीच 30.54% रहा है। श्रावस्ती जिले की 3.46%

आबादी शहरों में रहती है। जनपद का मुख्यालय भिन्गा है। जनपद के उत्तर पूर्व दिशा में बलरामपुर, दक्षिण पूर्व में गोण्डा और दक्षिण पश्चिम में बहराइच जनपद अवस्थित है। उत्तर दिशा में इसकी सीमा नेपाल राष्ट्र से लगती है। श्रावस्ती जनपद में 5 विकास खण्ड इकौना, हरिहरपुर रानी, गिलौला, जमुनहा व सिरसिया है। इसकी तीन तहसीलें भिन्गा, इकौना और जमुनहा है।

आंकड़ा स्रोत एवं विधितन्त्र :–

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। आंकड़ों का संग्रहण जनपद के वेबसाइट एवं जिला सांख्यिकीय पत्रिकाओं से किया गया है। जनपद के भूमि उपयोग के परिवर्तन के विश्लेषण हेतु 2005–06, 2010–11 तथा 2020–21 के वित्तीय वर्षों के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। भू अभिलेख कार्यालय श्रावस्ती एवं खण्ड विकास अधिकारी कार्यालयों से प्राप्त आंकड़ों का भी सम्मिलित किया गया है। भूमि उपयोग के क्षेत्रीय वितरण हेतु विकास खण्डों को आधार बनाया गया है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं रेखाचित्रों का निर्माण कम्प्यूटर के माध्यम से किया गया है।

सारिणी–1 वर्षवार जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप

भूमि उपयोग	2005–06		2010–11		2020–21	
	क्षेत्रफल हे0 में	प्रतिशत	क्षेत्रफल हे0 में	प्रतिशत	क्षेत्रफल हे0 में	प्रतिशत
कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	192887	100	192887	100	192887	100
वन	34353	17.8	34353	17.8	34361	17.81
कृषि बेकार भूमि	965	0.50	418	0.21	161	0.08
वर्तमान परती	1852	0.96	2642	1.36	7058	3.65
अन्य परती	1468	0.76	1037	0.54	2265	1.17
ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	745	0.38	488	0.25	152	0.07
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	20665	10.71	20965	10.86	22819	11.83
चारागाह	58	0.03	30	0.01	480	0.24
उद्यान एवं बाग	2214	1.15	1067	0.55	1258	0.65
शुद्ध कृषित भूमि	130567	67.69	131887	68.37	124332	64.45

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका, 2006, 2011 एवं 2021

भूमि उपयोग का परिवर्तन :–

वन :– वन हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण अंग है। यह मानव के क्रिया कलापों के अतिरिक्त पर्यावरण के संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय वन नीति 1988 के अनुसार मैदानी क्षेत्रों में 20 प्रतिशत भाग पर वनों का विस्तार होना चाहिए। श्रावस्ती जनपद कृषि प्रधान होने के साथ–साथ तराई क्षेत्र में आता है, अतः यहां पर प्रदेश के अन्य जनपदों की अपेक्षा वनों का विस्तार अधिक है। 2020–21 में जनपद के कुल 192887 हेक्टेयर क्षेत्र में 34353 हे0 क्षेत्र पर वनों का विस्तार था जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का 17.81 प्रतिशत था (सारिणी–1) 2005–06 में जनपद में सिरसिया (9.79%), जमुनहा (2.64%) और हरिहरपुर रानी (1.20%) भाग पर वनों का विस्तार था किन्तु

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सारिणी–2 जनपद श्रावस्ती में भूमि उपयोग (प्रतिशत में)

विकास खण्ड	वर्ष	कुल क्षेत्रफल हे0 में	वन	कृषि बेकार भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग कृषि	चरागाह	उद्यान एवं बाग	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
जमुनहा	2005–06	35311	2.64	0.68	1.06	0.84	0.49	11.5	0.01	1.4	81.35
	2010–11	35485	2.62	0.27	1.46	0.55	0.30	11.9	0.01	0.34	82.42
	2020–21	36989	2.51	0.09	3.63	1.08	0.09	12.9	0.01	0.60	78.96
गिलौला	2005–06	30675	0	0.57	1.43	0.97	0.33	14.45	0.03	1.54	80.69
	2010–11	30309	0	0.25	1.74	0.66	0.32	14.70	0.009	0.80	81.49
	2020–21	31572	0	0.10	4.38	1.31	0.08	15.97	0	0.85	77.27
इकौना	2005–06	27633	0.25	0.46	1.65	1.11	0.35	16.33	0.07	1.56	78.19
	2010–11	27241	0.25	0.22	1.92	0.75	0.20	16.66	0.02	0.79	79.14
	2020–21	28720	0.24	0.08	4.38	1.36	0.07	17.15	0.30	1.68	74.71
हरिहरपुर रानी	2005–06	28310	1.20	0.57	1.01	0.95	0.59	9.25	0.08	1.46	84.81
	2010–11	42344	34.0	0.18	1.25	0.52	0.25	4.87	0.01	0.49	57.58
	2020–21	41470	35.55	0.07	2.30	1.17	0.06	8.11	0.37	0.27	52.06
सिरसिया	2005–06	42071	9.79	0.61	0.70	0.69	0.48	11.94	0.01	0.95	74.79
	2010–11	57508	32.35	0.18	0.93	0.37	0.20	9.82	0.01	0.47	55.69
	2020–21	54136	34.38	0.07	3.9	1.05	0.07	8.63	0.42	0.31	51.13

स्रोत – जिला सांख्यिकी पत्रिका, 2006, 2011 एवं 2021

गिलौला में वनों का विस्तार शून्य है सारिणी–2। जनपद में 2005 में 34553 हे0 क्षेत्र पर वनों का विस्तार था जिसमें 2021 तक बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ यह लगभग स्थित रहा है (सारिणी–1)। सारिणी–2 में विकास खण्डवार अध्ययन से पता चलता है कि जमुनहा और इकौना में वनों का विस्तार ऋणात्मक रहा है जबकि सिरसिया और हरिहरपुर रानी विकास खण्डों में वनों के विस्तार में धनात्मक वृद्धि हुई है। 2021 में हरिहरपुर रानी के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 35.55% भाग पर एवं सिरसिया के 34.38% भाग पर वनों का विस्तार पाया गया है।

कृषि योग्य बेकार भूमि :– यह वह क्षेत्र या भूमि होता है जिसमें किसी दशाओं के कारण वर्तमान समय में कृषि कार्य नहीं हो रहा है लेकिन वर्तमान समय में वैज्ञानिक अनुसंधान उचित संसाधनों की उपलब्धता एवं सरकारी भूमि सुधार कार्यक्रमों के द्वारा इस भूमि को कृषि कार्यो में उपयोग किया जा सकता है। वर्ष 2005–06 में कृषि योग्य बंजर भूमि जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 965हे0 (0.50%) पर विस्तृत था (सारिणी–1)। जनपद में सबसे अधिक जमुनहा विकास खण्ड में (0.68%) एवं सबसे कम इकौना विकास खण्ड में (0.46%) था (सारिणी–2)। 2010–11 में इसमें सभी विकास खण्डों में कमी दर्ज की गयी जो निरन्तर 2020–21 तक जारी रही। जहां जनपद में 2020–21 में 161हे0 (0.08%) भूमि ही कृषि योग्य बेकार भूमि के अन्तर्गत रह गयी। सारिणी–2 देखने से पता चलता है कि

समस्त विकास खण्डों में वृद्धि दर ऋणात्मक रही है। इसका मुख्य कारण कृषि के अतिरिक्त कार्यों में इसका उपयोग हो रहा है।

वर्तमान परती :– वर्तमान परती वह भूमि होती है जो एक कृषि वर्ष या उससे कम समय तक कृषि रहित रहती है (वासुदेवन 2007)। इस भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए परती के रूप में छोड़ दिया जाता है जिससे भूमि में उर्वरता आ जाती है। वर्ष 2005–06 में वर्तमान परती भूमि जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 0.96% था (सारिणी–1)। जिसमें सर्वाधिक इकौना (1.65%) एवं सबसे कम सिरसिया (0.70%) था। वर्ष 2010–11 में बढ़कर कुल क्षेत्रफल का 1.36% हो गया जिसमें सर्वाधिक इकौना (1.92%) एवं सबसे कम सिरसिया (0.93%) रहा। 2020–21 में 1.36% से बढ़कर 3.65% हो गया जिसमें सर्वाधिक गिलौला (4.38%) एवं इकौना (4.38%) तथा सबसे कम हरिहरपुर रानी (2.30%) रहा। चित्र–1

अन्य परती भूमि :– वह भूमि जो पहले 5 साल तक या उससे अधिक समय तक परती या कृषि रहित रहती है वह इस वर्ग में आती है (वासुदेवन 2007) इसे तकनीकी विकास या उचित सुविधाओं द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है। यह भूमि 2005–06 में जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 0.76% भाग पर फैली थी। जिसमें सबसे अधिक अन्य परती भूमि इकौना (1.11%) तथा सबसे कम सिरसिया (0.69%) था। वर्ष 2010–11 में अन्य परती भूमि के क्षेत्रफल में गिरावट दर्ज की गयी और यह कुल क्षेत्रफल के 0.54% भूभाग पर विस्तृत थी। जिसमें सर्वाधिक इकौना (0.75%) एवं सबसे कम सिरसिया (0.37%) दर्ज किया गया। वर्ष 2020–21 में इसमें पुनः वृद्धि दर्ज की गयी और जनपद में इसका प्रतिशत 1.17% हो गया। जिसमें सबसे –

सारिणी–3 विकास खण्डवार भूमि उपयोग परिवर्तन (प्रतिशत में) (2005–06 से 2020–21)

विकास खण्ड	वन	कृषि योग्य बेकार भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यान एवं बाग	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
जमुनहा	0.21	85.89	2581	33.3	79.31	18.34	40	54.74	1.67
गिलौला	0	81.25	215.71	39.26	73.52	13.80	0	42.90	1.44
इकौना	1.43	82.0	175.87	27.37	77.3	9.17	295.5	12.04	0.69
हरिहरपुर रानी	4223	102.5	232.75	81.1	83.92	37.81	578.26	72.95	10.08
सिरसिया	351. 5	82.21	617.28	94.53	80.39	6.94	3185.7	57.75	12.04

स्त्रोत – सांख्यिकी पत्रिका, 2005–06 से 2020–21 से परिकलित

अधिक इकौना विकास खण्ड (1.36%) एवं सबसे कम सिरसिया (1.05%) रहा (सारिणी–2)।

ऊसर एवं कृषि के लिए अनुपयुक्त :– ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि से तात्पर्य उस भूमि से है जो कृषि के लिए न तो उपयुक्त है और न ही कृषि के लिए वर्तमान समय में इसे उपयोग लाया जा सकता है। वर्ष 2005–06 में श्रावस्ती जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 0.38% ऊसर एवं कृषि के लिए अनुपयुक्त क्षेत्र के अन्तर्गत था जिसमें सबसे अधिक हरिहरपुर रानी विकास खण्ड (0.59%) एवं सबसे कम गिलौला (0.33%) रहा। वर्ष 2010–11 में ऊसर एवं कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में गिरावट आयी और यह 0.25% क्षेत्र पर रह गया जिसमें सबसे अधिक गिलौला

(0.32%) एवं सबसे कम इकौना और सिरसिया (0.20%) में रहा। वर्ष 2020–21 में इसमें और कमी आयी तथा यह 0.07% क्षेत्र पर रह गया जिसमें सर्वाधिक जमुनहा (0.09%) एवं सबसे कम हरिहरपुर रानी (0.06%) रह गया।

कृषि के अतिरिक्त अन्य भूमि उपयोग :– वह भूमि जिसका कृषि कार्य में उपयोग नहीं किया जाता है बल्कि मानव बस्तियों, अवसंरचना एवं उद्योगों आदि में किया जाता है। वर्ष 2005–06 में यह भूमि कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 10.71% थी (सारिणी–1)। जिसमें सबसे अधिक गिलौला विकास खण्ड (16.33%) एवं सबसे कम हरिहरपुर रानी (9.29%) रहा। (सारिणी–2) 2010–11 में इस प्रकार की भूमि में थोड़ी वृद्धि हुई और यह बढ़कर 10.86% हो गया जिसमें सबसे अधिक गिलौला (16.66%) एवं सबसे कम हरिहरपुर रानी (4.87%) दर्ज किया गया। वर्ष 2020–21 में इसमें 8.84% की वृद्धि दर्ज की गयी और यह 11.83% हो गया। जिसमें सर्वाधिक वृद्धि गिलौला (17.15%) एवं सबसे कम हरिहरपुर रानी (8.11%) रहा।

चारागाह :– वह भूमि जिस पर घास उगती है और जिसका उपयोग खेत के जानवरों को चरनें के लिए किया जाता है। यह प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों क्रियाओं का प्रतिफल होता है। वर्ष 2005–06 में चारागाह के अन्तर्गत जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 0.03% था। (सारिणी–1)। जिसमें सबसे अधिक हरिहरपुर रानी विकास खण्ड (0.08%) एवं सबसे कम जमुनहा एवं सिरसिया में (0.01%) रहा। वर्ष 2010–11 में चारागाह के क्षेत्र में कमी आयी और यह जनपद के 0.01% भाग पर रह गया जिसमें सबसे अधिक गिलौला (0.09%) एवं सबसे कम सिरसिया, हरिहरपुर रानी एवं जमुनहा (0.01%) दर्ज किया गया। सन 2020–21 में चारागाह के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई तथा जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 0.24% हो गया जिसमें सबसे अधिक सिरसिया (0.42%) एवं सबसे कम गिलौला (0.0%) रहा।

उद्यान वृक्षों एवं बागों के अन्तर्गत भूमि :– इसके अन्तर्गत मनुष्य के द्वारा अपने स्वामित्व में लगाये गये फलों एवं व्यवसायिक पौधों को सम्मिलित किया जाता है। वर्ष 2005–06 में श्रावस्ती जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 1.15% भाग पर इनका विस्तार था जिसमें सबसे अधिक इकौना विकास खण्ड (1.54%) एवं सबसे कम सिरसिया (0.95%) क्षेत्र में रहा। सन 2010–11 में जनपद में इसके अन्तर्गत तीव्र गिरावट दर्ज की गयी जिसका मुख्य कारण पुरानी बागों का तेजी से समाप्त होना रहा है। जनपद में 0.55% भाग पर उद्यान एवं बाग क्षेत्र रह गया जिसमें सर्वाधिक गिलौला (0.80%) एवं सबसे कम जमुनहा (0.34%) रहा। सन 2020–21 में यह बढ़कर 0.65% हो गया इसका मुख्य कारण लोगों द्वारा अपने खेतों में व्यवसायिक पौधों का रोपड़ रहा है। सबसे अधिक वृद्धि इकौना (1.68%) एवं सबसे कम हरिहरपुर रानी (0.27%) रहा।

शुद्ध कृषित क्षेत्र :– वह भूमि जिसका उपयोग फसलों को उगाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है उसको शुद्ध बोये गये क्षेत्र के अन्तर्गत रखते हैं। यह मानव के सामाजिक–आर्थिक एवं अन्य मानव के विकास का द्योतक होती है। वर्ष 2005–06 में जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 67.69% शुद्ध बोया गया क्षेत्र के अन्तर्गत आता था (सारिणी–1)। जबकि सबसे अधिक हरिहरपुर रानी (84.81%) एवं सबसे कम सिरसिया (74.79%) दर्ज किया गया। सन 2010–11 में जनपद में शुद्ध कृषित क्षेत्र में 1.01% की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 68.37% हो गया जिसमें सबसे अधिक जमुनहा (82.42%) एवं सबसे कम सिरसिया (55.69%) रहा। सन 2020–21 में जनपद के शुद्ध कृषित क्षेत्र में कमीं दर्ज की गयी और यह 64.45% हो गया जिसमें सबसे अधिक जमुनहा (78.96%) एवं सबसे कम सिरसिया (51.13%) दर्ज किया गया। सिरसिया एवं हरिहरपुर रानी क्षेत्रों में वनों का प्रतिशत अधिक होने के कारण यहां शुद्ध कृषित क्षेत्र का प्रतिशत कम है।

भूमि उपयोग परिवर्तन :– भूमि उपयोग परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्राकृतिक परिदृश्य को प्रत्यक्ष रूप से बस्तियों, वाणिज्यिक एवं आर्थिक उपयोग तथा वानिकी गतिविधियों जैसे मानव प्रेरित भूमि उपयोग के लिए परिवर्तित कर दिया जाता है। 2021 में नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार भूमि उपयोग परिवर्तन ने पिछली

सहस्राब्दी के भीतर पृथ्वी के सतह के लगभग 75 % हिस्से को प्रभावित किया है और 1960 के बाद से 32 प्रतिशत को प्रभावित किया है। जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही है उस गति से खाद्यान्न नहीं बढ़ रहा है जिसका मुख्य कारण कृषि भूमि का समुचित ढंग से उपयोग नहीं किया जाना है। वर्तमान में कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए आधुनिक कृषि यन्त्रों का प्रयोग किए जाने से भूमि क्षरण के साथ ही भूमि उपयोग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जनपद श्रावस्ती का कुछ भाग भाभर मैदान के अन्तर्गत आता है तथा शेष तराई में सम्मिलित है। जिसमें राप्ती नदी के द्वारा प्रतिवर्ष बाढ़ की आपदा आती है जिसके कारण भूमिक्षरण के साथ ही कई हेक्टेयर फसल नष्ट हो जाती है। साथ ही जल भराव की समस्या, भूक्षरण की समस्या, अनावृष्टि की समस्या एवं मृदा उर्वरता की समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

निष्कर्ष :

श्रावस्ती जनपद एक पूर्ण कृषि प्रधान क्षेत्र है यहां पर कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 2005–06 में 67.69 प्रतिशत था जो 2020–21 में घटकर 64.45 प्रतिशत हो गया। इस घटने का मुख्य कारण लोगों का कृषि कार्य से विमुख होना है क्योंकि खेती एक घाटे का सौदा माना जाता है। साथ ही जनसंख्या वृद्धि के कारण भी जोतों का आकार छोटा हो रहा है, जंगली जानवरों का प्रकोप बढ़ रहा है तथा छुट्टा जानवरों के द्वारा फसलों को नुकसान पहुंचाया जाना भी इसका एक प्रमुख कारण है। जनपद में वन क्षेत्र का विस्तार अधिक होने के कारण यहां शुद्ध कृषित भूमि का प्रतिशत कम है। जनपद में साक्षरता की कमी के कारण आज भी अधिकांश कृषक परम्परागत कृषि करते है साथ ही परिवहन अभिगस्यता की कमी भी जनपद के पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी है।

सन्दर्भ (Reference)

1- तिवारी, आर0सी0 : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, प्रयागराज।
2- गौतम, प्रदीप, शर्मा वी0एन0–2011 : जनपद महराजगंज, उ0प्र0 में भूमि उपयोग परिवर्तन एक भौगोलिक विश्लेषण, राष्ट्रीय भूगोल पत्रिका, वर्ष 3, अंक 2, पेज 41
3- शर्मा, चेतना, 2011 : मऊ जनपद में अवस्थापना तत्वों का ग्रामीण विकास का एक भौगोलिक विश्लेषण (अप्रकाशित शोध ग्रंथ) भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
4- श्रीवास्तव, आलोक 2001 : जनपद सुल्तानपुर (उ0प्र0) का भूमि संसाधन एवं जनसंख्या : एक भौगोलिक अध्ययनख शोध ग्रंथ, भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
5- वासुदेवन, एच0 2007 : भारत लीग और अर्थव्यवस्था, एन0सी0ई0आर0टी0, पेज–40–41
6- श्रीवास्तव, लोकेश व जाट नीतू 2006 : जबलपुर नगर के भूमि उपयोग प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक 42, संख्या–1 व 2, पेज–20–31
7- गौतम, अलका एवं रस्तोगी सोनल (2017) : संसाधन भूगोल–दोहन, संरक्षण एवं प्रबंधन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
8. Buck, JK, 1937 : Land utilization of China, Nanking University.
9. Kaziel, H.G. and V.C. Finch 1925 : Detailed field Mapping of an Agricultural Ares, Annal Asso, American Geographar, P. 15
10. Rao, V.L.S.P., 1947 : Soil survey and land use Analysis, Geographical Review of India.
11. Mathur, Anjana 2013 : "Dynamics of the land use and occuptional transformation in trans Yamuna, Delhi, Unpublished Ph.D. Thesis University of Delhi.
12. httpp://updes.up.nic.in